सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज
दिनांक 31 जुलाई 2015, शुक्रवार
(गुरू पूर्णिमा, दुर्गापुर)

! राधा–स्वामी.!

आपने (अजय कपिला जी) ने कहा ना, मैं आचार्य नही हूँ, मैं तो आचार्य का काम कर रहा हूँ। मैं भी यही कह रहा हूँ, मैं गुरू नही हूँ, गुरू का काम कर रहा हूँ। आप शब्दानन्द जी महाराज की वसीयत पढो उसमें मेरा काम है सत्संग देना और नाम दान देना और ये काम तभी तक है जब तक रवि पंण्डित वापिस नही आ जाते, जब रवि पंण्डित वापिस आएगें तो ये गददी उन्ही को संभालनी है। इसलिए मैं गुरू नही हूँ गुरू का काम कर रहा हूँ और आपकी जो भी समस्या हैं उनका समाधान कर रहा हूँ, और आपके जितने भी संशय हैं उनको साफ कर रहा हूँ और यही गुरू का काम है और यही मैं कर रहा हूँ।

हमारे अलीगढ के जो आचार्य हैं उन्होने बहुत अच्छा सत्संग दिया, इन्होने एक बात कहीं मुक्ति के बारे में, मैं इसके बारे में कुछ बताना चाहता हूँ,। देखो गुरू आपको कहेगा जा तेरा ये आखिरी जन्म है, इसके बाद तेरी मुक्ति है, आपको कैसे एहसास होगा कि हाँ ये मेरा आखिरी जन्म है? देखो गुरू के वचन अटल हैं, अब जिम्मेवारी तुम पर आती है, तुमको ये अहसास करना है अपने अंदर क्या ये मेरा आखिरी जन्म है? ये अहसास कैसे लाएगें आप? ये अहसास जब लाएंगें आप, जब आपकी सारी इच्छाएँ खत्म हो जाएँगी, एक भी इच्छा नही रहेगी। भगवान के दर्शन की भी इच्छा करना एक इच्छा है और ये इच्छा भी छोडनी पडेगी। क्यों? भगवान के दर्शन की भी इच्छा क्यों छोडनी पडेगी? भगवान के दर्शन की इच्छा क्या है? तुम भगवान के दर्शन की इच्छा करते हो, अगर वो तुम्हारे सामने आ गया तो तुम उसे कैसे पहचानोगे? क्या तुमने कभी भगवान को देखा है? अगर तुम्हारे ध्यान में भगवान आ गया तो तुम्हें कैसे पता चलेगा ये भगवान है, जिसके भी ध्यान में भगवान आता है, वो भगवान नही है, वो काल है आपको गुमराह करने के लिए, क्योंकि भगवान तो आ ही नही सकता। उसका कोई रूप ही नही है, वो कैसे आएगा? वो इसलिए नही आएगा तुम्हारे ध्यान में, अंग्रेजी में कहते हैं Self Realisation is God Realisation, अगर आपको भगवान ढूँढना है भगवान कौन है? आप शुरू करो अपनें आप से, पहले अपने आपको खोजो, तुम कौन हो? जब तुमको पता लगेगा मैं कौन हूँ? अपने आप पता लगेगा भगवान कौन है? अपने आपको खोजते–खोजते एक समय ऐसा आएगा, जब आप कहोगे अरे ये क्या हुआ? जिसको मैं खोज रहा था, वो मैं ही हूँ, इसलिए आपको भगवान के दर्शन नही होंगे, क्योंकि तुम खुद भगवान हो। मैं कहता हूँ ये प्रेमसुख है, प्रेमसुख तुम ध्यान करो प्रेमसुख के लिए, कौन सा प्रेमसुख तुमको दर्शन देगा, क्योंकि तुम तो खुद ही प्रेमसुख हो, जब तुम खुद ही भगवान हो, तो कौन सा भगवान आएगा तुमको दर्शन देने। ये आजकल के जो संत लोग हैं ये हमको गुमराह करते हैं कि हम तुमको भगवान के दर्शन करायेंगे।

हमारे दाता दयाल कहतें हैं–

नही रूप कोई, हैं सब रूप तेरे।

भगवान का कोई रूप नही है, ये सब उसी के रूप हैं, तुम भगवान को ढूँढ रहे हो, भगवान तो तुम खुद हो, भूल गए हो, पहचानो अपने आपको, तुम कौन हो? हरेक मनुष्य को चार सवाल करने चाहिए अपने आप से– मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से आया हूँ, मैं क्या करने आया हूँ, मुझे कहाँ जाना है? ये सवाल हरेक मनुष्य को अपने आप से करने चाहिए। अपने अंदर जाओ और इन चार सवालों के जबाब ढूँढो फिर आपके साथ एक चमत्कार होगा, क्या चमत्कार होगा? फिर आपको गुरू मिल जाएगा और वो गुरू आपको इन चार सवालों के जबाब दे देगा, जबाब देगा नही, तुमसे ही दिलवा देगा ताकि तुमको खुद पता लगे कि मेरे सवालों का जबाब सही है और जब तुमको इन चार

सवालों का जबाब मिल जाएगा फिर तुम्हारी मुक्ति है और फिर तुमको जन्म नही लेना है, क्यों? क्योंकि इन चार सवालों के जबाब ढूँढते–ढूँढते तुम संत बन जाओगे, तुम खुद गुरू बन जाओगे। इन चार सवालों के जबाब खोजते–खोलते तुम खुद मालिक बन जाओगे। इन चार सवालों को खोजने के लिए आपको बहुत परिश्रम करना पडेगा सबसे पहला परिश्रम क्या है? सबसे पहला परिश्रम है तुमको अपनी सारी इच्छाओं का त्याग करना पडेगा, अगर एक भी इच्छा मन में रखी फिर से जन्म। एक साधू था उसका अंतिम समय आ गया, उसने अपने शिष्यों से कहा मुझको यहाँ लिटाओ, मैं अपने प्राण छोड देता हूँ, ऊपर से घण्टे की आवाज आएगी, जब घण्टे की आवाज आएगी, समझना मेरी मुक्ति हो गई और मैं धुरपद धाम पहुँच गया। वहाँ एक बगीचा था, उनको वहाँ लिटा दिया और उसने प्राण छोड दिए लेकिन घण्टा नही बजा, उनका अंतिम संस्कार किया, लेकिन घण्टा फिर भी नही बजा, सब परेशान हों गए, ये क्या हुआ–ये क्या हुआ? घण्टा क्यों नही बज रहा है? तो वहाँ एक गुरू भाई था सब उसके पास गए और सारी बात बताई कि हमने उनको ऐसे लिटाया और उन्होने ऐसा कहा था लेकिन घण्टा नही बजा। जो उसका गुरू भाई था उसने पूछा कहाँ लिटाया था उसको, उन्होने कहा हुजूर यहाँ लिटाया था, वो गुरू भाई वहाँ लेट गया तो उसकी नजर वहाँ एक अमरूद के पेड पर गई। उस पेड पर एक बहुत खूबसूरत अमरूद लगा था, उसने देखा बहुत सुन्दर अमरूद है, वो समझ गया बात को, उसने कहा वो अमरूद उतारो, सारे गए वो अमरूद उतारा, इसे काटो, उसमें से एक कीडा निकला, इसे मारो, उसे मारा, घण्टा बज गया। इससे क्या साबित होता है? अगर एक भी इच्छा रह गई फिर से जन्म। उसको अंतिम इच्छा रह गई कि मैं अमरूद खा लूँ, वो कीडा बन कर अमरूद खाने लग गया।

मन की शुद्धी कैसे होती है? मन की शुद्धी ज्ञान से होती है।

ज्ञान का साबुन, मल–मल धोए, मन का मैल उतार।

ज्ञान का साबुन सिर्फ सत्गुरू के पास है, सतगुरू जब आपको ज्ञान का साबुन लगाएगा तो आपका मन शुद्ध हो जाएगा, फिर क्या होगा? आपकी सारी इच्छाएँ खत्म हो जाएंगी और जब आपकी सारी इच्छाएँ खत्म हो जाएगी, तो फिर क्या होगा? फिर आपको भगवान के दर्शन होंगे, किस रूप में होंगे? मन की शांती के रूप में, आपको मन की शांती के रूप में भगवान के दर्शन हो जाएंगे। क्या मन की शांती पाना इतना आसान काम है? इतना आसान नही है।

कबीर सहाब कहते हैं–तन धर सुखिया कोई ना देखा।

गुरू नानक जी कहते हैं– नानक दुखिया सब संसार।

जब दुखिया सब संसार है फिर मन की शांती कहाँ है? गुरू नानक कहते हैं– ''लाखो मध्य मत गिनो, कोटिन में कोई एक'' लाखों में नही कोरोडों में एक है जिसके पास मन की शांती है।

कबीर सहाब कहते हैं ''तन धर सुखिया कोई ना देखा, जो देखा वो दुखिया देखा'' फिर कबीर सहाब से पूछा, कोई तो सुखी होगा इस संसार में, उन्होने कहा– ''हाँ संत सुखी जिन मन जीती रे'' मन की शांती है इस संसार में ,कहाँ है? जिसने मन को जीत लिया, मन को जीत लिया से क्या मतलब है? एक संत कह पहचान क्या है? एक संत की पहचान है– वो दुख में दुखी नही होता और सुख में सुखी नही होता, ये है संत की पहचान। संत क्यों सुख में सुखी नही होता और क्यों दुख में दुखी नही होता? उसके पास ज्ञान है, ना सुख रहने वाला है, ना दुख रहने वाला है। सुख आता है–जाता है, दुख आता है–जाता है, मैं क्यों दुख– सुख के साथ पंगा ले लूँ? सुख–दुख रहने वाला है ही नही। वो ना सुख में सुखी रहता है, ना दुख में दुखी रहता है, क्यों? क्योंकि उसके पास मन की शांती है। तुम सारे लोग यहाँ पापड बेलते रहते हो, कभी मन में ख्याल आता है कि हमारे भी मन में शांती होनी चाहिए। एक बार आपके मन में शांती आ जाए फिर आप उसे छोडोगे ही नही, चाहे कोई आपको करोडो रूपए दे, हजार बोतलों में भी उतना नशा नही है जितना नशा मन की शांती में हैं। मन की शांती क्या होती है? मन की शांती वो होती है जिसे शुबह की रोटी

मिली ओर शाम की रोटी की परवाह ही नही है, उसी को बोलते हैं मन की शांती। हम क्या करते हैं शुबह का खाना खाया और शाम के खाने के लिए औरतें निकलती हैं मार्किट में सब्जी लाने के लिए। इधर खाना बनाकर हटे और उधर शाम के लिए सब्जी काटने लगे और हमारी सारी जिंदगी इसी में गुजर जाती है, कहाँ से आएगी मन की शांती? नही आएगी ऐसे मन की शांती।

देखो मैं बार–बार कह रहा हूँ, पहले मैंने कहा था कि तुमको कोई भगवान दर्शन नही देगा, लेकिन अब कह रहा हूँ कि भगवान तुमको दर्शन देंगे और भगवान हैं। भगवान तुमको दर्शन देंगे मन की शांती में, जब तुम्हारे मन में शांती आ गई फिर तुम ऐसे बैठोगे भगवान की तरह, तुम्हे कोई चिंता नही रहेगी संसार की और जब तुम्हारे मन में शांती आएगी फिर तुम भगवान बन जाओगे, तुमको भी शाम की रोटी की कोई इच्छा नही होगी, हमेशा मालिक की मौज में रहोगे, जिस मालिक ने मुझे यहाँ तक पहुँचाया है, वो मुझे शाम की भी रोटी देगा।

एक आदमी था वो भगवान को मानता ही नही था। रोज गालियाँ देता था। गालियाँ देते–देते उसे 80 साल हो गए। शहर के एक सेठ ने अपने यहाँ लंगर करवाया और सबको बुलवाया लेकिन उसकी एक शर्त थी कि जो भी भगवान को मानता है, भोजन उसी को मिलेगा। सेठ के यहाँ लंगर शुरू हुआ, सब आने लगे और सेठ दरवाजे पर खडा हो गया पूछने के लिए। उस लाईन में वो 80 साल का बुढढा भी आ गया, सब एक–एक करके अंदर जा रहे हैं और सेठ सबसे पूछ रहा है कि आप भगवान को मानते हैं, हाँ मानते हैं, ठीक है आप चलो अंदर, अब उस बुढढे का नम्बर आया, उससे पूछा क्या आप भगवान को मानते हो? उसनें कहा कौन है भगवान? मैं किसी भगवान को नही मानता, सेठ ने उसे वापिस भेज दिया, आपकें लिए यहाँ खाना नही है। भगवान रात को सेठ के सपने में आते हैं और सेठ से कहते हैं, बडे प्रेमी हो मेरे, बडे भक्त हो मेर, वो आदमी 80 साल मुझे गालियाँ देता रहा लेकिन एक रात मैने उसे भूखा नही सुलाया और वो एक दिन तुम्हारे पास आया और तुम उसे एक दिन भोजन नही दे सके। इससे क्या साबित होता है? इससे साबित होता है कि भगवान कहीं नही है, वो हमारे अंदर है, हम ही है भगवान, वो 80 साल तक भगवान को गालियाँ देता रहा लेकिन याद तो करता रहा।

एक बात और बताऊँ आपको भागवत में लिखा है जब कृष्ण ने कंश को मारा तो कंश की मुक्ति हो गई। अब आप सोच रहें होंगे कि कंश इतना अत्याचारी था। उसने अपनी बहन के 8 बच्चे मार दिए फिर भी उसकी मुक्ति कैसे हो गई? उसमें लिखा है कि जब कंश को पता लगा कि कृष्ण मेरा वध करेगा, वो 24 घण्टे कृष्ण के ध्यान में रहने लगा, उसको 24 घण्टे एक ही ध्यान था कृष्ण का और जब उसको कृष्ण का ही ध्यान था तो उसकी और कोई इच्छा ही नही थी और जब कृष्ण ने कंश को मारा तो उसकी मुक्ति हो गई। अब बताओ 3–3 घण्टे बैठकर अभ्यास करेगा और उसका ध्यान कहीं और ही होगा तो क्या उसकी मुक्ति हो सकती है? तुम एक मिनट भी ध्यान में मत बैठो लेकिन हर समय 24 घण्टे गुरू का ध्यान अपने मन में रखो, हर समय गुरू को याद रखो, तुम्हारी मुक्ति हो जाएगी। क्यों? तुम पूछ सकते हो क्यों? क्योंकि जब तुम्हारे मन में गुरू के अलावा कोई ख्याल ही नही रहेगा और कोई इच्छा ही नही रहेगी, केवल गुरू का ध्यान रहेगा तो तुम्हारी इच्छाएँ खत्म हो गई ना और जब इच्छाएँ गई , मन में शांती आ गई तो तुम्हारी मुक्ति है। जब गुरू मिले तो क्या कमाना? सत्गुरू खोजो रे भाई, जग में दुर्लभ रत्न यही है। अगर जग में कोई दुर्लभ रत्न है, वो है सत्गुरू। इसलिए सत्गुरू खोजो ओर सत्गुरू को खोजने का तरीका क्या है? गुरू खोजने का तरीका यह नही है भैया मुझे गुरू करना है, कोई अच्छा सा गुरू बताओ। वो कहेगा, हाँ एक गुरू हैं लंबी दाढी है, सफेद बाल, गले में मोतियों की माला, सफेद कपडे हैं और हजारों की भीड है। अगर आपने उसकी बात मान ली तो जरूर आप किसी ठग के पास पहुँच जाओगे और वो आपको जिंदगी भर लूटता रहेगा और आपके हाथ कुछ नही आएगा। सच्चा गुरू ढूँढने का तरीका एक ही है, अपने अंदर मालिक से मिलने की इच्छा पैदा करो और जब वो इच्छा आपकी चर्म सीमा

पर पहुँच जाएगी तो गुरू आपके सामने और जब गुरू मिला फिर क्या कमाना। फिर वो आपके मन में झाडू लगाता है, आपके गंदे विचारों को झाडू लगाता है, ओर आपके मन को शुद्ध करता है ओर जब आप उस झाडू वाली मशीन से निकलोगे तो आप अपने को एक नया आदमी पाओगे। मैं कौन हूँ, पहले मैं क्या था और अब क्या हूँ। यही एक चमत्कार गुरू करता है और यही सबसे बडा चमत्कार है।

लेकिन हमारी बदकिस्मती क्या है? एक बार में इसके (क्रिस्ट्या) के गांव गया था। वहाँ एक औरत आई, कहने लगी महाराज जी मेरी भैंस बीमार है, दूध नही देती। अब बताओ इसमें मैं क्या करूंगा। ऐसे–ऐसे लोग आते हैं। एक बार दो औरतें आई, दोनो एक साथ थी। एक औरत कहती है महाराज जी मेरे पास दो बेटियाँ हैं, बेटा नही है और दूसरी ओरत कहती है मेरे चार बेटे हैं, चारों बेटों मे से मुझे कोई अपने पास नही रखता और ना मुझसे कोई ठीक से बात करता है, मैं बहुत दुखी हूँ। अब गुरू ऐसा चमत्कार दिखायेगा कि पहली ओरत को भी बेटे की इच्छा नही रहेगी और दूसरी औरत को भी उसके बेटे रख लेंगे, लेकिन ऐसा चमत्कार सिर्फ एक सच्चा सत्गुरू ही कर सकता है। अगर आपको सच्चा सत्गुरू चाहिए तो अपने अंदर मालिक से मिलने की चाह पैदा करो और अपने चार सवालों के जबाब माँगो, फिर गुरू तुम्हारे सामने।

! राधा स्वामी !